धरकट सूम !

Dharakat Suum

(प्रहसन)

R. BHAWANI DAYAL

B. BHAWANI DAYAL,
JACOBS, NATAL, SOUTH AFRICA.

हरद्वार प्रसाद जालान
Haradvaar Prasaad Jaalaan
(आरा-निवासी)

Maah 1979 Vikram Samvat

मार्गशीर्ष, संवत् १९७९

Price Annas-10

मूल्य ॥=) First edition

..१ ज

लेखक और प्रकाशक

हरद्वार प्रसाद जालान

(सेठ रामनारायण सागरमलकी कोठी)

चौक, आरा

प्रथम संस्करण १०००

मुद्रक

महादेव प्रसाद सेठ

बालकृष्ण प्रेस

१३, शंकर घोष लेन

कलकत्ता

हरद्वारप्रसाद जालान

समर्पण

श्रीमान् सेठ सागरमलजी जालान

की

सेवामें

सादर सविनय सप्रेम

पूज्यपाद पिताजी! आपके शुद्ध सरल स्नेहका अमृत पीकर ही यह जीवन धन्य हुआ है। आप ही की कृपासे अपनी यह "तोतली भाषाकी रचना" सर्वसाधारणके सामने रखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिये, आप ही के नित्य-वन्दनीय चरणोंमें हम इसे भक्तिपूर्वक भेंट करते हैं। विश्वास है, जिस प्रकार, बड़े प्यारसे, आप हमारी स्फुट वाणी सुनकर, पुलकित होते हैं, उसी प्रकार, यह अपने लाड़ले "तोतेकी तोतली भाषा" सुनकर, आप वात्सल्य-विमुग्ध होंगे।

आपकी आँखोंका तारा—

"हरद्वार"

प्रेमोपहार

इस प्रहसनके पात्र ।

(१) सेठ सूमड़ाचन्द—मक्खीचूस (घरकटसूम) सेठ । तोंदवाला ।

(२) रामकुमार—सेठका परमप्रिय पुत्र । शौक़ीन, सुशिक्षित, रसिक ।

(३) सजनकुमार—सेठका भतीजा, रामकुमारका परमप्रिय मित्र ।

(४) बुद्धू—सेठका शोख़, हँसोड़, पढ़ा-लिखा और प्यारा नौकर ।

(५) पण्डितजी—ग्वालियरके नामी गवैया । वैष्णव ।

(६) बढ़ई—एक बूढ़ा आदमी ।

हमारे धन्यवादके पात्र ।

(१) श्रीमान् पण्डित ईश्वरी प्रसादजी शर्म्मा, 'मनोरञ्जन'-सम्पादक, आरा ।

(२) „ बाबू शुकदेवसिंहजी, नागरी-प्रचारिणी सभा, आरा ।

(३) „ „ शिवशङ्कर प्रसाद गुप्त; नवद्वीप; आरा ।

(४) „ वन्धुवर नवरङ्गलाल तुलसान ; आरा ।

(५) „ „ दुर्गाप्रसाद पोद्दार, आरा ।

(६) „ „ श्रद्धेय रामेश्वर प्रसादजी जालान, आरा ।

(७) प्रिय वन्धु बनारसी प्रसाद जालान, आरा ।

(८) „ „ चण्डी प्रसाद पोद्दार, आरा ।

(९) „ „ विहारी लाल तुलसान, डाल्टेन गञ्ज ।

अभिप्रेत वक्तव्य।

जिस प्रकार, "घनश्याम" के हृदयमें, "चपला" चमक जाती है, उसी प्रकार, हमारे हृदयमें, एक दिन, इस पुस्तककी रचनाकी उद्भावना, सहसा प्रकट हुई। यह उसीका क्षीण प्रकाश है। यह 'जुगनूकी जोत' किसीके दिलको, थोड़ी देरके लिये भी, प्रसन्नताके मन्द प्रकाशसे जगमगा सकेगी या नहीं, यह कहनेकी ढिठाई हमसे नहीं हो सकती।

इसे पसन्द करके, प्रकाशित करनेके लिये, जिन सज्जनोंने हमें उत्साहित किया, उनकी सेवामें, सम्मान-पूर्वक, धन्यवाद समर्पित करनेके बाद, हम उन पद्योंके रचयिताओंकी भी कृतज्ञता स्वीकार करते हैं, जो इसमें यत्र-तत्र उद्धृत किये गये हैं। अपने माननीय माष्टर साहब "मारवाड़ी-सुधार"-सम्पादक के हम विशेष उपकृत हैं, जिन्होंने इसको "बड़ा मनोरंजक" कहकर साहस बढ़ाया।

यह प्रहसन कहे जाने योग्य नहीं है। नाटक भी नहीं है। सरस साहित्यिक रचना भी नहीं है। दो-चार घड़ीके लिये दिलचस्पीका सामान भी नहीं है। है क्या?—एक नौ-सिख नगण्य लेखककी अनुभव-हीन लेखनीका लड़कपन। यदि लड़कपनकी यह शोखी और गुस्ताखी, कनैठी और चपत मारकर, हवा कर दी गयी, तो फिर जिन्दगी भर 'भोंदूमल' और 'बोदा' बना रहना पड़ेगा। कहीं 'दाद' मिली, तो बहुतसे 'दिलोंकी खुजली' मिटानेकी कोशिशमें कामयाबी हो सकेगी। इसे पढ़कर यदि किसी दिलमें थोडी भी गुदगुदी पैदा हुई, तो हम अपनी इस तुच्छातितुच्छ सेवाको भी घडी भरके लिये, सार्थक समझेंगे।

आरा (बिहार) कार्तिकी पूर्णिमा ARRAH., E.I.R.	विनयावनत हरद्वार प्रसाद जालान (मन्त्री, मारवाड़ी-सुधार-समिति)

* श्रीगणेशाय नमः *

धरकट सूम ।

पहला अङ्क ।

(पहला दृश्य)

[एक मामूली कमरेमें सेठ सूमड़ाचन्दजीका प्रवेश]

सेठजी—हम अपने ही मनकी करेंगे। तुम्हारा क्या? हम रण्डी नचावेंगे, भाँड़ बुलावेंगे ;—

बुद्धू—(बीचहीमें आकर और बग़लमें छिपकर) बेशक, रण्डी नचाइये, भाँड़ बुलाइये, आग लगाइये, कोई रोकता थोड़े है? मगर अफ़सोस कि रण्डियोंका नाम जपते हैं ; पर टका सन्त ख़र्च नहीं करते !

से०—(बिगड़कर) इसमें तुम्हारे बापका क्या ?

बु०—(चौंककर) बेशक, मेरे बापका क्या ?

से०—(झुँझलाकर) लोग झट कह देते हैं कि सेठ कंजूस हैं !

बु०—(विचित्र ढङ्गसे) बेशक, मैं भी तो यही कहता हूँ ।

से०—इसमें तू कहेगा क्या? और लोग ही कह कर क्या करेंगे? हमारी कमाई है। हमारी इच्छा, ख़र्च करें या न करें!

बु०—बेशक, इसमें दूसरोंके बापका क्या?

से०—बुधुआ! तू कहाँसे टपक पड़ा?

बु०—(आपही आप) योंहीं पक गया था, टपक पड़ा!

से०—देख, लोग हमें नाहक कंजूस कहते हैं।

बु०—बेशक, कहते तो लोग ज़रूर हैं।

से०—तो फिर?

बु०—अबसे अगर कोई फिर कहे तो उसपर इज़्ज़त-हतकीकी नालिश ठोक दीजिये।

से०—मगर इसमें तो पैसा ख़र्च होगा न?

बु०—बेशक, पैसा तो ख़र्च होगा सही, मगर आपका नाम तो बदनाम न होने पावेगा? (आपही आप) अब क्या नेक-नाम बनोगे चचा!

से०—ख़ैर, कितने पैसे अन्दाज़न ख़र्च होंगे?

बु०—यह तो वकीलों और हाकिमोंकी मर्ज़ी पर है।

से०—तू कोशिश-पैरवी करेगा कि नहीं?

बु०—बाप रे बाप! मैं अदालतोंके इन्द्रजालमें न फँसने जाऊँगा। धोखा खा चुका हूँ।

से०—हाकिमोंको तो हम फँसा लेंगे, तू बाहरकी दौड़-धूप कर। क्यों?

बु०—अच्छा, यही सही, लेकिन आख़िरी फ़ैसले तक डटना पड़ेगा।

से०—मगर ख़र्चका अन्दाज़ भी तो मालूम होना चाहिये?

बु०—तब तो नहीं होगा, अदालतके मामलेबाज़को थैलीकी पेंदी काट देनी चाहिये।

से०—(कान पर हाथ देकर, चौंककर) अरे बाप! इस तरह तो बहुत पैसे ख़र्च होंगे।

बु०—बेशक, मगर इज़्ज़त तो बचेगी?

से०—बाज़ आये ऐसी इज़्ज़तसे!

बु०—बेशक बाज़ आना चाहिये। दौलतके आगे इज़्ज़त ससुरीकी क्या हक़ीक़त? बस, चुपचाप सब सुना कीजिये।

से०—मगर यह भी न होगा। कबतक चुपचाप सुनें?

बु०—जबतक टेंटसे टका निकालनेकी हिम्मत न हो! और कबतक?

से०—बेवकूफ़! कोई किफ़ायत तरीक़ा क्यों नहीं बताता?

बु०—बेशक, निहायत किफ़ायत नुस्ख़ा लीजिये। बताऊँ?

से०—(झुँझलाकर) हाँ, हाँ, जल्दी बताता क्यों नहीं?

बु०—आप एक पबलिक जल्सा दे डालिये। सारी पबलिक आपको कंजूस कहना छोड़ देगी।

से०—नालायक़ कहींका, यही निहायत किफ़ायत नुस्ख़ा है? हमने तो बार बार कह दिया कि पैसे ख़र्च करनेका

नाम न ले,चाहे और जो बता । जल्सेका नाम ज़बान पर भी मत लाना, ख़बरदार !

बु०—(आपही आप) मालूम होता है कि मेरी ज़बान भी इनके यहाँ मकफूल करा दी गयी है ! (प्रकट) बेशक, सेठजी ! आजसे आपके सामने कभी रुपये-पैसे ख़र्च करनेका नाम तक न लूँगा ।

से०—शाबाश ! मगर पबलिकको राजी करनेका कोई ढङ्ग भी तो निकाल ?

बु०—बेशक, ढङ्ग तो यही है कि इधर आपकी जेबसे पैसा निकले और उधर सबके मुँहसे कंजूस कहना छूटे ।

से०—बस, यही एक ढङ्ग है ?

बु०—नहीं, एक और भी है, आप चुप रहिये, उन्हें भूकने दीजिये । आख़िर मुँह दुखेगा तो वे आप ही छोड़ देंगे ।

से०—हाँ, यही ठीक है । कुत्ते भूकनेकी आदत नहीं छोड़ते तो हम कंजूसीकी आदत क्यों छोड़ें ?

बु०—बेशक, (आपही आप) इनमें और कुत्तेमें यही तो फ़रक़ है ! (प्रकट) माल तो आपका है, क्या उनके बापका है ?

(सजनकुमारका प्रवेश)

सजन०—नहीं जी, माल तो सेठजीका है ! किसी मरदूदका एक पैसा हिस्सा नहीं है ! क्या किसोको दान-पत्र लिख रहे हैं ?

बुद्धू—(धीरेसे सजनके कानमें) आज न जाने क्यों सेठजीकी मति पलट गयी है। सबेरे उठे तो रो रहे थे। कहते थे कि कैसे ईश्वर हमारा बेड़ा पार करेगा। कह रहे हैं कि रामकुमारको वारिस बनाकर हम अब भजन करने बाहर जायँगे।

सेठजी—तुम लोग क्या क़रूरा मिला रहे हो ?

सजन—आप ही के बारेमें कुछ बातें हैं।

सेठ—हमारे बारेमें ?

सजन—हाँ, हाँ, आपके बारेमें।

सेठ—हमारे बारेमें क्या ?

सजन—यही कि, आप रामकुमारको अपने धनका वारिस बनाकर भजनानन्दी बनना चाहते हैं। तो बात बहुत अच्छी है। रामकुमार है भी वैसा ही सुशील लड़का।

बुद्धू—बेशक, सुशीलतामें उसकी क्या कसर है ?

सेठ—वाह रे तेरा 'बेशक'! तू क्या जानने गया कि,सुशीलता किस चिड़ियाका नाम है ?

बुद्धू—(धीरेसे) बेशक,आप तो जानते हैं !

सेठ—सजनकुमार ! रामकुमारके मित्र होनेके कारण तुम उसकी तारीफ़ करते हो ?

सजन०—आप ऐसा क्यों कहते हैं ?

सेठ—वह तो बड़ा फ़जूल-खर्ची है।

बुद्धू—बेशक, मैं भी जानता हूँ।

सजन—(आप ही आप) यह गड़बड़-घोटाला कैसा ? बस, इसी बूद्धूकी ये सारी करामातें मालूम होती हैं। अच्छा, दूसरी चाल चलूँगा।

सेठ—चुप क्यों हो गये ? सजन !

सजन—क्या कहूँ ? आप विश्वास न करेंगे।

बुद्धू—बेशक, नहीं करेंगे।

सजन—(डाँटकर) चुप रह बदमाश !

बुद्धू—बेशक, मैं चुप हूँ (सटक सीताराम हुआ)

सेठ—सजन ! आज बूटी छनी है क्या ?

बुद्धू—बेशक, घनी छनी हैं।

सजन—चुप रह नामाकूल ! हरवक्त हँसी ? (सिरमें एक चपत मार कर) बड़ा शोख़ हुआ जाता है ?

(सेठजी हँसते हैं)

बुद्धू—(सर टटोलते हुए) बुरा हो बेहये हँसनेवालों का ! किसीपर चपत जमे और कोई हँसे ?

सेठ—अच्छा किया। यह है भी इसीका पात्र !

बुद्धू—(बगलमें हटकर) बेशक, जब मैं भी थप्पड़का जवाब घुस्सेसे देता तब न पात्रता मालूम होती ?

सजन—हाँ, आज मैं आपसे एक चीज़ लेने आया हूँ !

सेठ—(आप ही आप) यह बला किधरसे आयी ? या ईश्वर ! कहाँ जायँ ? किधर जायँ ? (प्रकट) सजन-

सेठ—नौकरोंके हाथमें ख़र्च करनेका अख्त्यार न देना।

बुद्धू—(हटकर) कमबख्त यह क़ायदा कहाँसे लाया!

सजन—बस?

सेठ—नहीं जी, अभी और सुनो। ऐसे मित्रोका सङ्ग न करना जो आपसकी लेन-देनका हिसाब करना कराना नहीं चाहते।

सजन—बस हुआ कि अभी कुछ बाकी है?

सेठ—घबड़ाते क्यों हो? पाँचवीं बात यह है कि, कभी 'तवाजा' या 'चन्दा' का नाम जबानपर न लाना।

बुद्धू—(छिपकर) बेशक! उपदेश हो तो ऐसा हो!

सजन—अब तो कुछ कहना नहीं है?

सेठ—अभी तो हमारा असली विचार सुना ही नहीं! ऊब क्यों गये? सुनो—

"दूधको कहत छीर, दूबको सुघास कहौं,
दाड़िम अनार नाम धरिकै रहत हौं।
दरपनको आरसी, त्यों दलको कहत पत्र,
दुनीको जहान कहि सुखको लहत हौं।
दावत दकार कहूँ कानमें परै जो आय,
छोड़िकै मकान हाँते भागन चहत हौं।
दाईको ताई ताई कहिकै पुकारौं, और,
देइबेके डरते कबौं दादा न कहत हौं!"

बुद्धू—(आप ही आप) बेशक, दकारका दुश्मन हो तो ऐसा हो ! अब समझा ! कंजूस वही है जिसका दकार कहते दाँत दुखने लगे !

सजन—आपका सिद्धान्त तो उत्तम है लेकिन चञ्चल जीभको उतना संयमी बनाना बड़ा मुशकिल है !

सेठ—अभी हमारे विचारका सिलसिला खतम भी नहीं हुआ और तुम मुशकिल और आसानकी पर्वाह करने लगे ? इस ढङ्गसे तुम एक कौड़ी भी नहीं बचा सकोगे !

सजन—अच्छा, अपना सिद्धान्त या विचार जो कुछ हो सो पूरा पूरा सुना लीजिये, तब मैं भी उस पर विचार करूँगा ।

सेठ—बस एक सिद्धान्त और सुन लो । जितना हम कह गये हैं उतने ही पर पहले अमल करो, फिर पीछे बतलावेंगे । सुनो :—

देवताको सुर औ असुर कहौं दानवको,
दाईको सु धाय दाल पहिती कहत हौं ।
दरपनको मुकुर और दाखको मुनक्का कहौं,
दासको खवास कष्ट दुखको कहत हौं ।
देवीको भवानी अरु देहराको कहौं मठ,
कबौं नहिं जीभको दकारसे दगत हौं,
दानाको चबेना त्योंही दीपको चिराग कहौं,
देइबेके डर हम तो दादा ना कहत हौं ॥

बुद्धू—(छिपकर) बेशक! दकार सुन कर देहमें दर्द न हुआ, दिल न दहला, दुम दबाकर दूर न भागे, तो फिर तारीफ क्या?

सजन—वाह! अर्थशास्त्रकी ऐसी बारीक बातोंको तो कोई Economy का प्रसिद्ध Professor भी समझा नहीं सकता!

बुद्धू—बेशक,भला पढ़ा-लिखा आदमी भी कहीं इतनी बड़ी बारीकीको परख सकता है? हर्गिज नहीं, मुमकिन नहीं, यह पहुँच तो सेठजीकी तरह अनपढ़ अक्लमन्दकी ही सूझका काम है!

सेठ—अजी प्रोफ़ेसरको इन बातोंका क्या पता है? पढ़ना-लिखना तो उसके लिये जरूरी है जो बेवकूफ हो! अक्लमन्द तो खुद पढ़े-लिखे हुई हैं। उन्हें खोपड़ी खखोरन ख़ाँ बननेसे क्या ग़रज़?

बुद्धू—(आप ही आप) बेशक, खुद अक्लमन्द हो तो ऐसा हो (सेठकी ओर इशारा करके) जो गर्भहीमें गीता पढ़ चुका हो।

सजन—आपतो बिना पढ़े-लिखे ही कितने काव्यतीर्थोंको छका सकते हैं। चाहे कोई तेरह तीर्थ क्यों न हो आपके सिद्धान्तोंका रहस्य समझना उसके लिये भी टेढ़ी खीर है।

सेठ—अजी कितने तीर्थ हम देख चुके, कुछ ठिकाना है? हरद्वार, बनारस, रामेश्वर,द्वारका,जगन्नाथ, प्रयाग, अयोध्या, मथुरा, गंगासागर, कितने तीर्थोंके नाम गिनावें?

बुद्धू—(स्वगत) बेशक, तीर्थाटन करते करते सेठजी स्वयं तीर्थ बन गये और सेठानी पुण्य-तिथि बन गयीं!

सजन—मैं तो अब समझ गया कि आप अनेक तीर्थोंके पण्डे हैं, आपका मुकाबला कोई तीर्थ नहीं कर सकता!

बुद्धू—(स्वगत) बेशक, पण्डोंके भी चचा हैं आप (सेठकी ओर इशारा करके) आपके दर्शन मात्रसे उपवास-व्रत करना पड़ता है तो क्या आप किसी तीर्थसे कम हैं? तीर्थमें उपवास करना तो महापुण्य है!

सेठ—हमारे पास कितने तीर्थयात्री आते हैं पर हम उन्हें बिना टकाके ही टरका देते हैं।

बुद्धू—बेशक! तीर्थ तो तीर्थयात्रियोंसे स्वयं लेता है, वह क्यों देने जाय? वह तो उनका सारा पाप ले लेता है और अपना पुण्य दे देता है! आपका दर्शन ही पुण्य है, आप और देंगे ही क्या? जिसका दुर्लभ दर्शन ही प्राप्त हो जाय उससे और अधिक आशा व्यर्थ है।

सजन—अब तो मैं जाता हूँ। आपके उपदेशोंपर अभ्यास करूँगा और अपनी सफलताकी सूचना दूँगा।

सेठ—कैसे अभ्यास करोगे और कैसे सफलताकी पहचान कर सकोगे? कुछ ढङ्ग मालूम है?

सजन—सफलताकी पहचान और अभ्यास करनेका ढङ्ग अगर आप ही बतला दें तो बड़ा उपकार मानूँगा।

बुद्ध—बेशक, गुरुका उपकार चेला न मानेगा तो कौन मानेगा? जो चेला न मानता हो वह सौतेला होगा या अलबेला होगा।

सेठ—(जानेके लिये तैयार होते हुए) हमारा नौकर यह बुद्धू हमारे स्वभावको अच्छी तरह जानता है। इसीसे हमारे स्वभावके बारेमें सब बातें पूछ लो, यह तुम्हें जितनी बातें बतलावे उनसे ही तुम असली मतलब समझ जाना कि, कैसा स्वभाव बनानेसे तुम पैसे-कौड़ीकी हिफाजत कर सकते हो।

सजन—अच्छी बात है। बुद्धूसे आपके स्वभावका वर्णन सुन कर मैं सब बातें समझ लूँगा। आप जाना चाहते हैं तो जाइये।

(सेठका प्रस्थान)

बुद्धू—बला टल गयी! (सेठकी ओर घृणासे देख कर) अच्छा हुआ कि ऐसे मनहूस कंजूससे पिण्ड छुटा।

सजन—बुद्धू! अब सेठजीके स्वभावकी खूबियोंको सुनाओ। तुम्हींको न सौंप गये हैं?

बुद्धू—बेशक। लेकिन कुछ जायदाद थोड़े सौंप गये हैं?

सजन—अपने स्वभावके बारेमें मुझसे सब बातें बतलानेकी जिम्मेदारी तो सौंप गये हैं न?

बुद्धू—अच्छा, तो उनके स्वभावकी पहली बात सुनिये—

"दोहरा कवित्त गीत गजल सुनावै, कोऊ
छन्दहूँ सुनावै, ताहि देत न पसम हैं।
पाहुनो जो आवै ताहि पानहूँ न देत ,सब
जानत जहान, यह कुलकी रसम है।
मुहर रुपैया कहौं कौड़ीकी चलावै कौन?
बाहर न जाने पावे भौनकी भसम है।
लेइबेकी बेर तो हजारन पै हाथ ओड़ैं,
सेठ सूमड़ा चन्दको तो देबैकी कसम है।"

सजन—तो क्या पाहुनेको पानीके लिये भी नहीं पूछते?

बुद्धू—बेशक, बस अलगसे आते ही देख कर उन्हें जूड़ी बुखार चढ़ जाता है!

सजन—तो क्या सचमुच घरकी राख भी बाहर नहीं जाने पाती?

बुद्धू—अगर ऐसा हो तो उन्हें सवा सौ डिग्री बुखार चढ़ जाय।

सजन—अजी तुम क्या कह रहे हो?

बुद्धू—मैं जो कहता हूँ सो पाव रत्ती बावन तोले सही कहता हूँ। तुम अचम्भेकी बात मानते हो? सुनो, सुबह उठ कर सेठजी जब माला जपते हैं तब अपनी लक्ष्मीको नित्य यही प्रार्थना सुनाते हैं——

"दाता घर होती तो कदर तेरी जानी जाती
आई है भले घर तू बधाई बजवाय री।
खाने तहखानेमें आनिके बसेरा लेहु
होहु ना उदास चित चौगुनो बढ़ाव री।
खैहौं ना खवैहौं, मरि जैहौं तो सिखाय जैहौं
यही पूत नातिनको आपनो सुभाव री।
दमरी न देहौं कबौं जानमें भिखारिनको,
सम्पति ! निचिन्त बैठि भले गीत गाव री।"

सजन—भाई ! तुम्हारे सेठजीका यह स्वभाव तो बड़ा बुरा है। न अपने खायँगे और न औरोंको खिलायँगे और यही स्वभाव नाती-पोतोंको भी सिखायँगे ?

बुद्धू—बेशक, न सिखायँगे तो पुश्त-दर पुश्त क्या खायँगे ?

सजन—अपने भी खानेकी बात होती, तब तो कोई शिकायत ही नहीं थी। मगर खुद भी न खाना, औरोंको भी न खिलाना, तब धनका मजा क्या रहा ? मैंने तो सुना है कि—

"जसको सवाद जो पै सुनो कवि आनन सों,
रसको सवाद जो पै औरको पिआइये।
जीभको सवाद बुरो बोलियो न काहू कहूँ,
देहको सवाद जो निरोग देह पाइये।
घरको सवाद घरनीको मन लिये रहै,
धनको सवाद सीस नीचेको नवाइये।

सबै दुनियाके लोग जानिके अजान होत,
खैबेको सवाद जो पै औरको खवाइये।

बुद्धू—बेशक, सुननेको तो मैंने भी सुन रक्खा है कि—
"दिया है खुदाने खूब खुशी करो मौज भर,
खाव पिओ देव लेव यही रह जाना है।
राजा राव उमराव केते बादसाह भये,
कहाँते कहाँको गये लाग्यो ना ठिकाना है।
ऐसी जिन्दगानीके भरोसे पै गुमान ऐसे ?
देस देस घूमि घूमि मन बहलाना है।
आये परवाना पर चले ना बहाना,
इहाँ नेकी करि जाना फेरि आना है न जाना है॥"

लेकिन भाई! ऐसे फक्कड़ोंके ही पाले अगर दुनिया पड़ जाती तो आज वह अँग्रेजी राज्यकी प्रजाकी तरह खाली-पेट नजर आती! खैरियत है कि दुनियामें सूम भी हो जाते हैं, नहीं तो विष्णु भगवानकी प्यारी लक्ष्मीकी कद्र तो वैसे ही कौड़ीकी तीन हो जाती जैसे असहयोगके जमानेमें सरकारी अफ़सरोंकी।

सजन—वाह! तुमने तो खूब कही! मगर यह तो बताओ कि, तुम्हें तो ठीक वक्त पर मुशाहरा मिल जाता है न?

बुद्धू—बेशक, मुझे क्यों न मिलेगा? मैं ही तो सिर्फ जानता हूँ कि कुञ्जियोंका गुच्छा कहाँ रख कर वे सोते हैं। अगर मुझे वक्त पर न दें तो मै वैसे ही एकके चार

वसूल कर लूँ जैसे बेईमान लोग सरकारसे भत्ता वसूल करते हैं!

सजन—भला, और नौकर कैसे जीते हैं ?

बुद्धू—इधर उधर हाथ साफ करते हैं! बेचारे और क्या करें ? सेठानी उन्हें बहुत मानती हैं, मगर सेठजी जानने नहीं पाते । अगर वे जान जायँ तो मुफ्तमें बेचारोंकी जान जाय! एक डपटमें तो सेठानीकी नानी मर जाती है ।

सजन—तो क्या नौकरोंको तक़ाज़ा करने पर भी नहीं मिलता ? तक़ाज़ा ही तो वसूलका बाप है!

बुद्धू—बेशक, लेकिन सेठजी तो तक़ाज़ाके भी बाप हैं। वे तो रोज़ ही कितने तक़ाजे और तनाजेके जनाजे निकालते हैं।

सजन—तब तो बड़े विचित्र मनुष्य हैं।

बुद्धू—बेशक, इस सृष्टिमें एक अजीब जन्तु हैं। अगर—

"आजको कहैं तो आठ मास लौं न लागै ठीक,
काल्ह जो कहैं तो मास सोरह चलावहीं ।
पाँच दिन कहैं पाँच बरस बिताय देहिं,
पाख जो कहैं तो लाख दिवस बितावहीं ।
सुनैं जो तगादा, नहिं वादाका इरादा करैं,
आपु न लजात फेरि वाहीको लजावहीं ।

ऐसो सत्यवादी सेठ सूम हैं दिवैया जहाँ,
काहेको पवैया तहाँ जीवत लौं पावहीं ?"

सजन—तो क्या धर्म-कर्ममें भी सेठजी कंजूसी करते हैं ?

बु०—बेशक। दान-दच्छिना देनेकी बेर जो सोचते हैं सो भी सुन लीजिये और समझ जाइये कि उनमें दान देनेकी दिलेरी है या नहीं—

"जामें दू अधेली चार पावली दुअन्नी होत,
तामें पुनि आना लखो सोरह समात है।
बत्तिस अधन्नी जामें चौसठ पईसा होत,
एक सौ अठाइस सु अधेला गुन मात है।
जुग सत छप्पन छदाम तामें देखियत,
दमरी सु पाँच सत बारह लखात है।
कठिन समैया कलिकालको कुटिल दैया,
सलग रुपैया भैया कापै दियो जात है ?"

सजन—बस, रहने दो। मैं सेठजीके स्वभावको अच्छी तरह पहचान गया।

बुद्धू—बेशक, तब तो तुम पक्के कंजूस हो गये ? क्यों ?

सजन०—हाँ, कुछ तो ज़रूर हो गया, मगर पक्का नहीं हुआ।

बुद्धू—बेशक, मगर मैं तो तुम्हें एक घंटेमें पक्का बना दूंगा। बना दूँ ?

सजन—कैसे बनाओगे ? क्या ठोक-पीट कर दुरुस्त करोगे ?

बु०—बेशक, भला कहीं बिना ठोक-पीटके भी भूत भागता है ?

सजन—मुझे भूत लगा है थोड़े ?

बुद्ध—बेशक, भूत नहीं तो, भूतकी भाभी तो लगी है ?

सजन— भूतकी भाभी कौन ?

बुद्ध—वही चुड़ैल फ़जूलख़र्ची ! याद करो। वह तुम्हारी नस-नसको दूहती जाती है। तुम्हारे खूनका एक एक क़तरा चूसती जाती है । भूल गये ?

सजन—भूला तो नहीं हूँ, मगर—

बुद्ध—'मगर' क्या ?

सजन—उससे पल्ला छुड़ानेका उपाय भूल गया हूँ ।

बुद्ध—बेशक, लेकिन पहले जानते ही न थे तो भूले कैसे ?

सजन—पिताजीने बतलाया था, मगर उस वक्त तो अपना ही दिल पराया था, इसे एक कामिनीकी कायाने मायामें फँसाया था, फिर उसीने इसे पैरोंसे ठुकराया था, उसी ठोकरने मुझे नींदसे जगाया था, तब मैं अपने पिताको देख कर शर्माया था, उसी शर्मने मुझे फ़जूलखर्चीसे बचाया था ।

बुद्ध—बेशक, बेहया कभी फ़जूलख़र्चीसे बच नहीं सकता। बच भी जाय तो उसे अन्न पच नहीं सकता। सुनो—

फ़जुलख़र्चीकी आदत है बुरी दुनियेमें ऐ यारो !
इसे तुम छोड़ दो पहले तो पीछे सब बला टारो ॥

(सजन छिप जाता है)

बुद्धू—(बिना किसीको देखे, फुर्तीसे उठकर) ज़रूर हराम समझूँगा। आजसे अपनेको सिर्फ ईश्वरका गुलाम समझूँगा। सूखे चनेको ही अब हिन्दका बादाम समझूँगा! आजसे नौकरी-पेशेको नीलाम समझूँगा। अपनी छोटी झोपड़ीको ही आरामका मुक़ाम समझूँगा। प्यारी जोड़ूके कलामको ही अब ईश्वरका पैग़ाम समझूँगा। श्यामसुन्दर रामकी निष्काम सेवासे ही अपनेको आप्तकाम समझूँगा।

सजनकुमार—(प्रकट होकर) मगर मैं तुम्हारा बकना बेकाम समझूँगा।

बु०—(चौंककर) क्यों?

सजन—अभी हम लोगोंको सेठका सुधार करना है। मिलजुलकर उनका उपकार करना है। उन्हें तैयार करके अपना कारोबार करना है। इस बीचमें इस्तिफ़ा देनेका काम बेकार करना है।

बु०—बेशक, मगर उनका सुधार करना उनपर अत्याचार करना है। उनका उपकार करना मक्खीका शिकार करना है। उनको तैयार करना गँवारसे तक़रार करना है। अपने कारोबारके लिये उनपर एतबार करना रोज़गारका संहार करना है! इसी मौकेपर इस्तिफ़ा देना उन्हें आइन्देके लिये होशियार करना है।

सजन—जो कुछ हो, मगर इस बात पर अभी विचार करना है। पहले उनके दिल पर अख्त्यार करना है। फिर उनके सुधारका काम लगातार करना है।

बु०—बेशक, उनका सुधार करना बिना पैसेकी ज्यौनार करना है। इस बारेमें विचार करना भी बेचारे विचारके साथ व्यभिचार करना है। उनके दिल पर अख्त्यार करना सिर्फ नरक पर अधिकार करना है। उनके उद्धार-के लिये अपनेको बीमार बनाना जानबूझ कर आफ़त स्वीकार करना है।

सजन—खैर, चाहे जो हो जाय, तुम सिर्फ देखते रहो, दस्तन्दाज़ी मत करना, मैं सब काम बनालूँगा।

बु०—बेशक, मैं चुप रहूँगा, चूँ तक न करूँगा, आप जो जीमें आवे सो कीजिये।

सजन—(इशारा करके) देखो, रामकुमार आ रहे हैं।

बु०—बेशक, आ तो रहे हैं, अपना काम शुरू कीजिये, मैं कुछ न बोलूँगा।

(रामकुमार एक आदमीको साथ लेकर आते हैं)

रामकुमार—क्या बुद्धू से बातें कर रहे हो?

सजन—बातें क्या करूँ? तुम्हारे बापने तो नाकों दम कर दिया है। वे तो एक अजीब टेढ़ी खोपड़ीके जीव मालूम होते हैं।

बु०—(बग़लमें छिपकर) बेशक, गोली मार देनेके क़ाबिल है।

राम०—जाने दो, बापकी बातें बाप हीके साथ रहें, मुझे उनसे कुछ मतलब नहीं।

बु०—(आप ही आप) देखा न? ये कलियुगी बेटे हैं! बापसे कुछ मतलब नहीं। इन्हींकी तरह इनकी माँको भी समझिये। उनको भी इनके बापसे कुछ मतलब नहीं।

राम०—क्या बड़बड़ा रहा है रे बुधुआ! चुप नामाकूल!

बु०—(बग़लमें छिप कर धीरेसे) बस तुम रह गये बेउसूलके चण्डूल!

सजन—ये महाशय कौन हैं?

राम०—आप ग्वालियरके नामी गवैये हैं।

बु०—बेशक, आपके पास भी काफ़ी रुपैये हैं। मज़ा कीजिये।

राम०—चुप!

बु०—अच्छा, मज़ा नहीं तो सज़ा कीजिये। (सहम जाता है)

सजन—तो आपके (गवैयेकी ओर इशारा करके) श्रीमुखसे कुछ......(गानेका भाव दिखाना)

राम०—कुछ फ़रमाइश करो, लयाक़तकी आज़माइश करो, तब न दिलको आसाइश होगा? यों तो आप अपने मनसे भी गा सकते हैं।

बु०—बेशक, तभी तो दिल लुभा सकते हैं, कलेजेमें फूलके तीर चुभा सकते हैं। मगर गाना और खाना अपने ही मनका अच्छा लगता है।

राम०—बस, चुप रह।

बुद्धू—(मुँह बन्दकर, डरसे अलग हटकर, हाथ जोड़े) बहुत अच्छा !! गुपचुप !

राम०—पण्डितजी, कुछ होना चाहिये।

बुद्धू—(बग़लमें छिपा हुआ) बेशक, कुछ तो होना ही चाहिये। नहीं तो, पण्डितजी हैं किस मर्ज़की दवा ? स्त्री-लिङ्ग गवैये भी तो नहीं हैं कि छेड़छाड़ कीजियेगा (दाँतोंसे निकली हुई जीभ दबाकर, सटक सीताराम)

सजन—देर हो रही है, कहीं तुम्हारे बाप चले आये तो मुशकिल होगी।

गवैया—सो क्यों ? गानासे उन्हें चिढ़ है क्या ?

रामकुमार—आप गाइये महाराज ! जिसे चिढ़ होगी वह यहाँ आवेगा ही नहीं।

गवैया—यह आपका ख़ास कमरा है ?

राम०—नहीं, ख़ास कमरेमें चलना हो तो चलिये।

सजन—हाँ, वहीं ठीक होगा।

बुद्धू—(हटकर) बेशक, वहीं तो गाना सटीक होगा, क्योंकि ज़नाना महल बिलकुल नज़दीक होगा। जब गाना ख़ूब बारीक होगा, तभी तो मामला शरीक होगा ? (उछलता है)

[सबका जाना, झट पर्देका उठना और सजीले कमरेका नज़र आना, सुसजित कमरेमें सबके साथ पण्डितजीका गाते हुए प्रवेश]

"कहीं वह ख़ाके पा गर देख पाते अपनी आँखोंसे।
तो सुरमेकी जगह उसको लगाते अपनी आँखोंसे॥
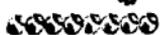
तेरे बीमार फुरक़तका सनम आँखोंमें दम आया ।
मुनासिब था कि इसको देख जाते अपनी आँखोंसे ॥
हमें रोने नहीं देते तसौवर तेरी आँखोंसे ।
व गर न दोनो आलमको डुबाते अपनी आँखोंसे ॥
हमें नरगिसका दस्ता ग़ैरके हाथोंसे क्यों भेजा ?
अगर आँखें दिखानी थीं, दिखाते अपनी आँखोंसे ॥
बुलाता तू अगर मुझको, क़सम है तेरे क़दमों की ।
कोई आता जो पैरोंसे, हम आते अपनी आँखोंसे ॥

सजन—वाह पण्डितजी ! क्या अच्छी ग़ज़ल है ! वाह ! आँखोंका मुहावरा तो बस आँखोंमें ही रखने लायक़ है ।

बुद्धू—(छिपकर) आजसे आँखोंका मुहावरा आँखोंमेंही रखनेका मुहावरा कीजिये, दिमाग़ तो मानों कुत्ता चाट गया है !

रामकुमार—बुद्धू !

बु०—(दौड़कर, हाथ जोड़े) जी हुजूर, बेशक, हाज़िर हूँ ।

राम०—पण्डितजीके वास्ते थोड़ी बर्फ़ी और नुक्तीका लड्डू ले आ ।

बुद्धू—बेशक, अभी लाता हूँ, यह लाया, वह लाया (उछलते कूदते खुशीसे जाता है)

सजन—तबतक एक दूसरा छिड़े ।

राम०—हाँ, कोई मीठी तान लड़े ।

पण्डितजी—अच्छा, वह तो पण्डित चाँदनारायणकी सिन्ध-भैरवी थी, अब बाबा मन्नूदासका एक सुन लीजिये—

"मोरे सुगना सुनि लै सही सही।
वेद पुरान भागवत गीता ये सब जानो दही दही॥
राम नाम सुमिरनको माखन सन्तन काढ़े मही मही।
सब जीवोंमें प्रभु है व्यापक, सो दिल राखो गही गही॥
दुख काहूको दीजै नाहीं, सुख दीजै जग रही रही।
साँचो साफ़ रहो सबहींसे, झूठो जैहैं बही बही॥
मन्नूदास जितै मन इन्द्रिन ऐसा साधू चही चही॥"

सजन—हाँ, चीज़ तो अच्छी है पण्डितजी! क्यों रामकुमार?

बुद्धू—(आकर, हाथमें मिठाईका दोना लिये हुए) बेशक, अच्छी क्यों न होगी? सेठ सूमड़ाचन्दजी आ गये तो और अच्छी हो जायगी!

रामकुमार—कहाँ आये? किधर आये?

(सेठजीका प्रवेश)

बु०—(उछल कर, एक किनारे, कोनेमें जाकर) यहाँ आये! इधर आये!

से०—(डाँटकर) रामकुमार! यह बेढब मामला कैसा? मेरे मकानके अन्दर जलसा? किस कम्बख्तको शामत सवार हुई है? (आस्तीन चढ़ाते और दाँत पीसते हुये) बता तो अभी उस हरामीके पिल्लेको मज़ा चखाता हूँ।

बुद्धू—(बगलमें धीरेसे छिपकर) बेशक, और मैं उसे मिठाई चखाता हूँ ।

से०—सब करामात बुधुआकी है । बुधुआ ! बुधुआ !

बुद्धू—(चौंककर डरके साथ ज्यों आगे बढ़ता हैं त्यों मिठाई का दोना गिर जाता है, हाँपता हुआ बोलता है) बेशक, हाज़िर हुज़ूर !

सेठ—(गिरी हुई मिठाइयाँ उठाकर खाते हुए) यह सब क्या हो रहा है रे बदमाश ? यह ज़नाना मकान है कि शहरकी सराय है ?

बुद्धू—(डरकर गिड़गिड़ाते और रुआसेसे होकर हाथ जोड़े हुए) बेशक, आप जो कहैं सो सब सही है। यह ज़नाना मकान है । सराय कौन कहता है ?

सेठ—चुप रह, बेहूदा कहींका ।

बुद्धू—कहींका नहीं, सरकार ! यहींका बेहूदा हूं ।

सेठ—बता, किसने यहाँ रंग जमानेकी राय दी है ?

बुद्धू—(डरते हुए, हाथ जोड़े, सजनकी ओर कातर दृष्टिसे देखकर) सजनकुमार ने ।

सेठ—क्यों रामकुमार, सच बात है न ?

राम०—हाँ, बिल्कुल सच है ।

सेठ—(गरजकर) क्यों रे सजन ! यह कैसा गड़बड़-घोटाला ? (उठाकर मिठाई खाते हुए) बोलता क्यों नहीं ? हलक़में कुछ अटका हुआ है ?

सजन—(निर्भयतासे) खावें आप और मेरे गलेमें अटके ?
यह तो अच्छा भीम-शकुनीका तमाशा ले आये !

बुद्धू—(बगलमें छिपकर) बेशक, जवाब हो तो ऐसा हो !

सेठ—अच्छा, हम मिठाई खाकर ज़रा पानी पी लें तो इसका फल चखाते हैं । बुधुआ ! पानी ला ।

बुद्धू—बेशक, अभी लाया, (धीरेसे) तबतक ओठ चाटिये । (जाता है)

सजन—पानी पीकर फल चखाइयेगा ?

सेठ—और नहीं तो क्या ?

(सजन और पण्डितजीमें इशारेबाजी होती है)

पंडितजी—पहले मिठाईके छ गण्डे पैसे यहाँ रख दीजिये, तब फल चखाइयेगा । नहीं तो गण्डेकी ख़ातिर डण्डे खाने पड़ेंगे ।

सेठ—(इधर उधर ताककर, आँखें तरेरकर, रोषमें) कोई है रे ? बुधुआ ! निकाल बाहर कर इस बदमाशको ।

बुद्धू—(दौड़कर आनेपर) बेशक, अभी इन्हें बाहर करता हूं ज़रा डण्डा ले आऊँ (दौड़ा जाता है)

सेठ—(गरजकर) रामकुमार ! तू ताक रहा है ? जल्दी बुधुआको बुला और इस मरदूदको जल्दी भगा ।

राम०—बहुत अच्छा (दौड़कर प्रस्थान)

सेठ—(झुँझलाकर) सजन ! वे दोनों ऊल्लू कहाँ गये ? क्या करने लगे ?

सजन—जाकर देखूँ ? बुला लाऊ ? (दौड़कर जाता है)

पंडित—कोई आवे कोई जाय,मैं तो छ गण्डे गिना ही लूँगा। नहीं तो (दाँत पीसकर) तुम्हें मार ही कर मरूँगा।

(सेठका भयभीतकी भांति भाव दिखाना और आश्चर्य प्रकट करना)

से०—पैसे देते हैं, पैसे ही न लोगे कि प्राण लोगे ?

पं०—पैसे न मिलेंगे तो प्राण ही लूँगा।

(सजनका फिर आना)

सेठ—सजन ! तुम इन्हें पैसे दे दो,हम तुम्हें कल किसी वक्त ज़रूर दे देंगे।

सजन—अच्छी बात है, दे देता हूं, लीजिये पंडितजी। (छ गण्डे गिनकर देता है)

सेठजी—बस, अब अपना डण्डा दूर रक्खो, नहीं तो छ गण्डे की ख़ातिर छ सौ घुल जायँगे। हाँ, ख़बरदार !

पंडित—(फिर डण्डे तानकर) छ सौ की हिम्मत है ? डण्डा रसीद करूँ ? सँभालना।

सेठ—(भयभीत) अब तो पैसे पा चुके, अब क्यों धमकाते हो ? कुछ और चाहते हो ?

पंडित—(घृणापूर्वक झुँझलाकर) तुम्हारे ऐसे मूज़ीसे क्या चाहूंगा ? लो, यह छ गण्डे पैसे भी ले लो,दरिद्र ! नहीं तो कहीं चिन्तामें प्राण न निकल जायँ !

(पैसे फेंककर प्रस्थान)

(दौड़ते हुए रामकुमार और बुद्धूका प्रवेश)

राम० और बुद्धू—कहाँ है ? किधर गया ?

से०—(गरजकर) इतनी देरके बाद बदमाश आ रहे हैं ! कहाँ थे तुम लोग अब तक ?

बुद्धू—बेशक, हम लोग दौड़े आ रहे थे !

से०—(डाँटकर) दौड़नेपर भी इतनी देर हो गयी ?

बुद्धू—(काँपते हुए स्वरमें) घरहीमें ज़रा देर हो गयी है !

से०—(ज़ोरसे) घरमें बाघ आया था ? पाजी कहीं का !

बुद्धू—बेशक, बाघकी जगहपर कुत्ता तो आया था ?

से०—(चौंककर) ऐं ? चौकेमें तो नहीं घुसा था ?

बुद्धू—चौकेमें ही तो मैंने डण्डेसे उसकी ख़बर ली है !

सेठ—(चिल्लाकर चौंकते हुए) अरे बाप ! यह क्या ? सर्वनाश हुआ ! छ गण्डेके बदले छ रुपयेका सत्यानास हुआ ! पकड़ ला साले कुत्तेको। सब लोग जाकर खदेड़ लाओ।

(बुद्धूके साथ सजन और रामकुमार भी दौड़े जाते हैं)

से०—(माथा ठोककर दुःखके साथ) न जाने आज किस कम्बख़्तका मुँह देखा हैं ? सुबहसे ही नुक़सानी हो रही है। दूध बिल्ली पी गयी, रोटी कुत्ता खा गया, खोपड़ी फूटते फूटते बच गयी। क्या कहूं ? नौकर एक नम्बरका बदमाश ! जोड़ू अव्वल दर्जेकी लापर्वाह ! तब भला दिन-दहाड़े घर क्यों न चौपट हो ?

(भीतरसे कुत्तेके भूँकनेकी आवाज आती है)

से०—अरे बाप! फिर साला किधरसे आया?

(मारो मारो चिल्लाते हुए दौड़कर सेठका प्रस्थान)

बुद्ध—(हाँपता हुआ आता है) बेशक, आजही तो मालूम होता है कि घरमें कोई उत्सव है। किसी दिन आँगनका दाना चुगने वाली चिड़िया भी घरमें नहीं चहकती थी और आज एक पसेरीपर हाथ साफ़ करके कुत्ता डकार रहा है।

सजन—(हँसते हुए आकर) डकार रहा है कि, जाकर देखो, बाहरका फाटक बन्द करके सेठजी उसे मार डण्डोंके, आँगन में क़ै करा रहे हैं।

बुद्ध—बेशक, मैंने तो कह ही दिया था कि, सेठ जी तक़ाज़ाके भी बाप हैं! उनका धन कुत्ता भी नहीं पचा सकता।

राम०—बस, चुप रह, जाने दे! जरा एक गाना गाने दे। दिल बहलाने दे। (हारमोनियम बजा कर गाने लग जाता है)

"कहीं सम्पत्तिको ग़फ़लतमें न गँवा देना।
इसे स्वदेशके उपकारमें लगा देना॥
जिसे तकलीफ़ हो आराम उसे दे देना।
कभी प्राणीको किसी, कष्ट भी नहीं देना॥
घृणाकी दृष्टिसे देखो न कभी जीवोंको।
तुम्हें तो चाहिये उनको गले लगा लेना॥

बना संसार है यश और धन कमानेको।
इसीसे चाहिये धन और यश कमा लेना॥
कहा कवियोंने है गर तुम अमर हुआ चाहो।
उसी दौलतको तो यशके लिये भुला देना॥

(पर्दा गिरता है।)

पहला अङ्क

—*—

(तीसरा दृश्य)

(एक सजी हुई कपड़ेकी दूकानमें, दो तीन मुनीम बैठे लिख रहे हैं)

सूमड़ाचन्द—(मसनदके सहारे बैठकर उँगलियोंकी गिरह पर हिसाब गिनते हुए) एक, दो, तीन, चार, पाँच, छ, सात, आठ, नौ, दस, ग्याराः, बाराः, तेराः, चौदाः, (दाँत तले उँगली दबा कर, फिर नाककी नोकपर चश्मा सरका कर दर्शकोंकी ओर देखते हुए) तुम लोग क्या हँस रहे हो ? रोकड़में एक पैसा घट रहा है, देनेकी हिम्मत है ? अगर एक पैसा जेबसे कहीं गिर गया होता, तब तो यह हँसी नहीं न आती ? (फिर उँगलीपर गिन कर) पन्द्राः, सोलाः, सत्राः, अठ्ठारः, उन्नीस, बीस, इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबीस, (उछल कर खुशीसे) वाहवा ! एक पैसा मिला न ? बुधुआ ! बुधुआ ! अरे जल्दीसे आता क्यों नहीं रे बदमाश !

बुद्धू—बेशक, आता हूँ मालिक। (आकर हाथ जोड़ता है)

सेठ—पैसा मिल गया ! घीके लिये तू ही दूकानसे लेगया था ?

बुद्धू—बेशक, मालिक ! अब याद पड़ा।

सेठ—(बिगड़ कर) बस ख़बदार! आजसे फिर कभी दूकानसे घीका पैसा न ले जाना। हम बाज़ आये घी खानेसे। एक पैसेके लिये इतनी परेशानी कौन उठावेग?

बुद्धू—(बग़लमें छिप कर) बेशक, कोई भलेमानस नहीं उठावेगा, मगर आपके ऐसा सूम तो पैसेके लिये क्या क्या न करावेगा (मुँह पर हाथ देकर भीतर ही हँसता है)।

(सजनकुमारका प्रवेश)

सजन—प्रणाम।

सेठ—जीते रहो।

सजन—(आप ही आप) और तुम क़िस्मतकी फटी चादर सीते रहो और पैसोकी मैल धोकर पीते रहो। (प्रकट) आज किस पर अभी बिगड़े हुए थे?

सेठ—कौन? हम?

सजन—हाँ, हाँ, अभी तो सुना है कि आप दूकान पर बैठे ही बैठे बड़े ज़ोरसे बिगड़ रहे हैं।

सेठ—(ख़फ़ा होकर)बिगड़ो तुम और बिगड़े तुम्हारी क़िस्मत! हम क्यों बिगड़ने लगे? फिर कभी ऐसी बात ज़बान पर न लाना! होश रखकर बोला करो। (दोनों हाथोंके दसो नख दिखाते हुए) हमारे तो बीसों नहँ मौजूद हैं, शरीरमें एक दाग़ भी नहीं है, हम भला क्यों बिगड़ने लगे? बिगड़ता है वह जो मित्रसे कपट करता है! बिगड़ता है वह जो गुरु-पत्नीसे रमण करता है! बिग-

ड़ता है वह जो भाईसे बेईमानी करता है! बिगड़ता है वह जो पेटके लिये गो-हत्या करता है! हम क्यों बिगड़ेंगे?
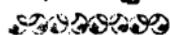
बुद्धू—(बग़लमें छिपकर निराले ढङ्गसे) बेशक, तब तो इस नियमके अनुसार आपको ज़रूर ही बिगड़ना चाहिये।

(रामकुमारका प्रवेश)

राम०—(सेठजीसे) जाने दीजिये,आप ज़रा सी बातका बतंगड़ बढ़ाकर तिलका ताड़ और राईका पहाड़ कर रहे हैं। सजनकी बात आप समझे ही नहीं।

से०—(राम०की ओर रोषसे देखकर)बड़े समझदार बने हो?

बुद्धू—(धीरेसे) बेशक, आपसे कहीं ज्यादा!

राम०—चलो सजन०! यहाँ तुम्हारा काम नहीं है। यहाँ पैसेका काम है, आओ, चलो मेरे साथ।

(दोनोंका प्रस्थान)

से०—पैसेका काम किसको नहीं है? राजासे रंक तक सब पैसेके प्यासे हैं। लोग कहते हैं कि पैसा हाथकी मैल है। मगर हम कहते हैं कि सिर दर्दके लिये वह भूतनाथ तैल है। पैसा हाथकी मैल नहीं है। पैसेकी मैल हम हैं। हम पैसेके, हमारी जोड़ू पैसेकी, हमारी लड़की पैसेकी, हमारा लड़का पैसेका, हमारा ईमान पैसेका, हमारी बात पैसेकी, हमारी जाति पैसेकी, हमारी जान पैसेकी, हमारा दिल पैसेका, हमारा ख़ून पैसेका।

बुद्धू—(बग़लमें छिपा हुआ) बेशक, पैसेके कितने सेर ख़ून ? क्या खटमल ख़रीद सकते हैं ?

से०—बुधुआ ! बुधुआ !

बु०—बेशक, यहीं तो हूँ ।

से०—सजनको बुला ला ।

(जाता है और बुला लाता है)

सजन—कुछ कहते हैं ?

से०—हम जब पैसेका महत्व समझाने लगे तब तुम चुपके से चम्पत हो गये ? वाह ! इसी तरह कंजूसी सीखोगे ? हमारे रञ्ज होनेसे कुछ दुःखी तो नहीं हो गये ?

सजन—(हँसते हुए) नहीं, मैंने कुछ बुरा नहीं माना । आप बड़े हैं, आपकी बातसे दुःखी होनेकी बे-अदबी मैं क्यों करूँगा ?

बुद्धू—(बग़लमें छिपकर) बेशक, एक बेशऊरसे तुमने अदब तो सीख ली !

से०—सजन० ! पैसेकी करामात तुम नहीं जानते । यह निगोड़ी दुनिया परमेश्वरसे भी बढ़कर अगर किसी चीज़को प्यार करती है तो वह पैसाही है । सिर्फ हमारी ही बात मत समझो । हम कहते हैं कि पैसेके लिये ही भारतमें अँग्रेजी राज्य स्थापित हुआ है । पैसाही अंग्रेजोंका प्राण है । इसीलिये वे संसार भरके वाणिज्यपर अधिकार किये बैठे हैं । इसीलिये वे सभ्य, धनी

और ज़बरदस्त कहलाते हैं। आजकल पैसेमें ही प्रतिष्ठा है। पैसेमें ही रूप, गुण और विद्या है। पैसा ही संसारकी सब संस्थाओंका सञ्चालक है। जहाँ देखो वहीं पैसेका पासा पड़ा हुआ है। खानेमें पैसा, खिलानेमें पैसा, मरनेमें पैसा, फैशनमें पैसा, थियेटरमें पैसा। हर जगह पैसेकी ही पैठ हैं!

सजन—तो क्या इस थियेटरमें भी पैसेकी पैठ है?

से०—हाँ, धूर्तता और बेईमानीसे तो इसमें बिना पैसेके भी पैठ हो जाती है।

बु०—(दर्शकोंकी ओर इशारा करके) बेशक, कितने मुफ्तख़ोर मुँह छिपाये इसमें भी बैठे हैं।

से०—देखो, आवाज़ आ रही है कि, हम मुफ्तख़ोर हैं।

सजन—यह आवाज़ पुलिसवालोंकी होगी!

बु०—बेशक, वे तो हरएक जल्सेमें मुफ्तख़ोरकी तरह घुस जाते हैं।

से०—ख़ाली उन्हींकी शिकायत क्यों? यहाँके गेटकीपर भी तो चोर हैं।

सजन—मगर एक आवाज़ सुन पड़ती है कि, हम नौकर हैं।

बु०—(बगलमें छिपकर)बेशक,मेरीही तरह किसी सूमड़े सेठके नौकर होंगे।

(आवाज उठती है—हाँ, हाँ, हाँ)

सजन—देखिये, बहुतसे लोग कह रहे हैं कि हम लोग

कंजूस मालिकके नौकर हैं। सुनिये, तीसरे चौथे दर्जेसे साफ़ आवाज़ सुन पड़ती है।

से०—नहीं जी, सूमका नौकर कभी थियेटरमें नहीं आ सकता।

बु०—बेशक, (दर्शकोंकी ओर) याद रहे यारो! आजसे कभी सूमकी नौकरी न करना। अगर करना भी तो सब तरह के शौक़से ज़रूर दूर रहना।

(रामकुमारका प्रवेश)

राम—आज पितरोंके श्राद्धका दिन है। चलिये, पुरोहित आ कर बैठे हुए हैं।

सेठ—अजी जाकर तुम्हीं सब रस्म पूरी कर दो, हमारी जरूरत ही क्या है?

बु०—(आप ही आप) बेशक, जजमान हो तो ऐसा हो।

राम०—घरमें बड़े-बूढ़ेके रहते हुए दूसरा कोई किसी रस्म-को पूरा नहीं कर सकता। आप हीको करना चाहिये।

सेठ०—अजी तुम किस झमेलेमें पड़े हो? थोड़ा-बहुत देकर टरका दो, हटाओ झंझट।

राम०—पुरोहितको दक्षिणा देनेमें आनाकानी करना ठीक नहीं। उनके सामने चलकर आप यदि एक पैसा भी देंगे और श्रद्धासे थोड़ा भी खिला देंगे तो वे तृप्त हो जायँगे।

सेठ—क्या पैसा भी देना होगा और खिलाना भी होगा?

सजन—यही तो रस्म ही है।
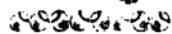
सेठ—राम० ! हमसे दोनों न देखा जायगा। तुम जाकर पितरोंको पार करो। हम तो हर्गिज़ न जायँगे।

(रा० कु०का प्रस्थान)

बुद्धू—(ज़ोरसे) बेशक, मत जाइये। पुरोहित भी जानेंगे कि किसी जजमानसे काम पड़ा था। उनको हलवा पूरी खानेका चस्का लग गया है।

सजन—चस्का नहीं, जो परम्पराकी परिपाटी है उसीके अनुसार उनका ऐसा अधिकार है।

सेठ—(बिगड़ कर) क्यों मूर्खकीसी बातें करते हो ? उनका क्या यही अधिकार है कि, जजमानके लड्डूके भरोसे विद्या-बुद्धिसे कोरे रह जायँ ?

मूँड़ना जजमानको ही क्या पुरोहित-धर्म है ?
दम्भसे जीवन बिताना क्या यही शुभ कर्म्म है ?
शास्त्र-विद्यासे विमुख ब्राह्मणका कैसा धर्म है ?
अग्निहोत्री हो न जो उस विप्रका क्या कर्म्म है ?
पेटके पीछे पड़े, समझा न विद्या-मर्म है !
ऐसे पुरोहित-धर्मपर धिक्कार है फिर शर्म है !

(सबका प्रस्थान, शीघ्रतासे बड़ा पर्दा गिरता है)

(पहला अङ्क समाप्त)

दूसरा अङ्क।
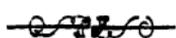
(पहला दृश्य)

(एक सुन्दर फुलवाड़ीमें सजन और रामकुमार टहल रहे हैं)

राम०—सजन० ! ज़रा फूलों पर मस्ताने भौंरोंका मँड़राना तो देखो। इन कलियोंकी मुस्कानमें प्रकृतिकी छवि-छटा तो देखो। बाग़की कैसी निराली हरियाली है ? कैसी गमकती हुई नेवारीकी क्यारी है ? मालूम होता है कि इस बाग़में बसन्तने बसेरा लिया है !

सजन—उपमाएँ और उक्तियाँ ताक़ पर रक्खो। पहले यह बताओ कि तुम्हारे दादा भी इस बाग़में कभी टहले थे ?

राम०—मेरे दादा नहीं टहले थे तो इससे क्या ? तुम्हारे चचा सेठजी तो टहल चुके हैं न ?

सजन०—तुम्हारे कहनेका मतलब यही न कि, मेरे बाप सेठजी इस बाग़में टहल चुके हैं ?

राम०—और क्या ? मुझे तो इस बातका घमण्ड है !

सजन—मालूम होता है जैसे तुम्हारे ही बापका हो।

राम०—मेरे बापका नहीं है तो इससे क्या ? इस वक्त है तो मेरे ही जिम्मे गिरवीं रक्खा ?

सजन—क्यों न हो, तुम्हारे बापने सूद दर सूद लगा कर, चार सौका चार हज़ार करके, यह बाग़ ले लिया है न ?

राम०—तो तुम्हें जलन क्यों होती है ?

सजन०—नहीं जी, जलन तो उसे हो जो कंजूस हो। अन्तमें तो यह बाग़ मेरे ही हाथ लगेगा !

राम०—कब ?

सजन०—जब तुम्हारा बुड्ढा बाप मर जायगा तब !

राम०—ऐसा नहीं हो सकता।

सजन०—हो क्यों नहीं सकता ?

राम०—मेरे और तुम्हारे स्वभाव तथा सद्भावसे यह साफ़ जाहिर है कि, ऐसा हर्गिज़ न होगा।

(बुद्धूका प्रवेश)

बु०—ख़ाली स्वभाव और सद्भाव ही का पुलाव पकेगा कि और भी कुछ काम होगा ?

सजन०—और तो वही काम है जिसके बारेमें तुझसे सलाह कर चुका हूँ। दूसरा तो कोई काम नज़र नहीं आता।

बुद्धू—सबसे पहले, पहला काम तमाम कीजिये, तब आगेका इन्तज़ाम कीजिये।

राम०—पहला काम क्या है भाई ? ज़रा मैं भी तो सुनूँ ?

सजन—पहला काम है तुम्हारे पिताको रायबहादुर बनाना।

बुद्धू—बेशक, आप भूलते हैं।

सजन०—हाँ, हाँ, रायबहादुर नहीं, दान-वीर बनाना।

राम०—मैं आज ही "तीन रेखा खींच कर" कह देता हूँ कि सेठजी किसी जन्ममें दान-वीर नहीं हो सकते। दान-वीरका दिल दुनिये भरकी दौलतसे भी बेशी दामका होता है। सेठजीका वैसा दिल हो जाय तो पृथ्वीपर स्वर्ग उतर आवे, और मगधमें काशी चली जावे!

बुद्धू—बेशक, किसी दिन ऐसा भी होगा। वह दिन दूर नहीं है। इस राज्यकी ज़िन्दगी चाहिये।

राम०—उस दिनतक तेरे जैसे कितने बुद्धू हो जायँगे।

बुद्धू०—बेशक, जो कहिये, मगर हमलोग सेठजीको दान-वीर बना ही कर छोड़ेंगे। पहले उन्हें रायबहादुर बनानेकी कोशिश की जायगी। जब सरकारको भर पेट चन्दा देकर रायबहादुर बन जायँगे तब यारोंके दबावमें पड़कर तवाजे करनेके लिये तैयार होंगे। जहाँ एक बार चन्दा देने और तवाजेमें अँग्रेज-अफसरोंसे हाथ मिलानेका मौका मिला कि, बस, फिर तो सेठजी नामके इतने भूखे हो जायँगे कि, नामके लिये उनसे जो चाहिये करा लीजिये।

सजन—वाह रे बुधुआ! तूने तो अच्छी तरकीब सोच निकाली।

बु०—बेशक, मगर इस तरकीबको काममें लाना चाहिये।

सजन—पहले कमिश्नर साहबकी ओरसे एक सभामें हाज़िर होनेके लिये सेठजीको निमन्त्रण भेजवाना चाहिये।

फिर उनके साथ एक धूर्त को अलग ही अलग सभामें भेजना होगा जो जज और कलक्टरसे उनका हाथ मिलवा दे तथा कमिश्नरसे उनकी तारीफ़ करा दे।

राम० सेठजी ऐसे भोंदूमल नहीं हैं कि खाली पीठ ठोकनेसे ही चंदा दे देंगे और अपनी तारीफ़ सुन कर बुलबुल हो जायँगे।

बु०—बेशक, हो जायँगे। अभी गोरे चमड़ेके हाथमें कितना जादू है सो आपको मालूम ही नहीं। (दर्शकोंकी ओर इशारा करके) उस जादूके फेरमें पड़कर अपने आपको भूलनेवाले इन हिन्दुस्तानियोंको खूब मालूम है, पूछ लीजिये।

राम०—यहाँ क्या पूछना है? हम लोगोंके मित्र सरदारमल हाल ही में रायबहादुर हुए हैं। चलो, उन्हींसे खूब खुलासगीके साथ तरकीब पूछ लें।

बु०—बेशक, चलिये, मगर उनकी खास तरकीब तो मैं ही जानता हूँ। आप लोगोंके तो वे चाहे कैसे भी मित्र क्यों न हों पर वह बात वे नहीं बतला सकेंगे। उस बातको अच्छी तरह जानते हुए भी, मैं आप लोगोंको न बताऊँगा।

सजन—तुझे बतलाना पड़ेगा।

बु०—तब आपको भी झुंझलाना पड़ेगा।

सजन० – कुछ मुज़ायक़ा नहीं, बता तो सही।

बु०—बतलाना क्या है? उनकी रायबहादुरीके लिये उनकी

सुशिक्षिता बीबीने, कमिश्नरसे कई बार मिलकर, बड़ी कोशिश की थी ।

राम०—सरासर झूठी बात है । उनकी बीबी तो पढ़ी-लिखी हैं ही नहीं ।

बु०—यह लो, "सच कहे मुँह मारा जाय, झूठ कहे तो जगपतिआय ।" उनकी बीबी जालन्धर-कन्या-महाविद्यालयमें बरसों रह कर पढ़ चुकी हैं, और आप कहते हैं कि पढ़ी-लिखी नहीं हैं !

राम०—क्या तुझे पक्की खबर है ?

बु०—बेशक, बिलकुल पक्की ।

सजन—हो सकता है भाई ! आश्चर्य्यकी बात नहीं है । पढ़ी-लिखी शरीफ़ औरतोंका प्रभाव अँग्रेजोंपर बहुत पड़ता है !

राम०—जाने दो, अपने रामको उससे क्या ग़रज़ है ?

सजन०—तो चलो, लाट साहबके दरबारमें शामिल होनेके लिये सेठजीके नामसे निमन्त्रण भेजवानेकी कोशिश कर दी जाय ।

राम०—हाँ, हाँ, चलो, नगद्-नारायणके प्रतापसे इस अँग्रेजी राज्यमें सब कुछ साध्य हो गया है । रायबहादुरी तो नगद्-नारायणके पैरोंपर लोटती है ।

(दोनोंका प्रस्थान)

बु०—बेशक, मगर नगद्-नारायण जिस कामको बरसोंमें कर सकते हैं उसको होशियार बीबी (चुटकियाँ बजाते

हुए) आनन-फ़ाननमें कर सकती है! खूबसूरत औरत मिलना आजकल अहोभाग्यकी निशानी है। मगर स्कूल और कालेजकी हवा खाई हुई बीबी तो उसीको मिलती है जिसपर ख़ुदाकी ख़ास मिहरबानी है। (मटक कर चोज़के साथ)

हुस्नका जौहर अगर औरतको मिल जा ऐ ख़ुदा!
इल्म भी हो, उम्र कम हो, देखिये फिर तो मज़ा!
मोहनी मुस्कान हो, तिरछी नज़र, बाँकी अदा,
फिर तो बीवीकी बदौलत भाग्यमें सब कुछ बदा।

(चंचलतासे प्रस्थान)

(नया पर्दा उठता है, सेठ सूमड़ाचन्द जमीनसे कुछ चुनकर उठाते हुए नजर आते हैं और झुंझला कर बोलते हैं।)

सेठ—बुधुआ! यह चिलम कैसे फूट गयी रे बदमाश!

(बुद्धूका प्रवेश)

बु०—बेशक, मैं नहीं जानता (भय और आश्चर्यका भाव)

सेठ—तो कौन जानता है? (बुद्धूको एक चपत मारना)

बु०—(सिर ओड़कर) बेशक, ख़ाहिश हो तो और भी मारिये, मैं कुछ बोलूँगा थोड़े? आजकल मालिक नौकरका बर्ताव तो ऐसा ही चल ही रहा है। मालिक मारता है, नौकर मुँह ताकता है!

सेठ—तो क्या तू बदला चुकाना चाहता है? लावें सोटा?

सब बद्माशी यहीं झाड़ देंगे, (चिलमके टुकड़े हाथमें लेकर जोड़ना चाहते हैं)

बु०—(डरसे झट बगलमें हटकर छिपते हुए) तब तो मैं आपसे भी बढ़कर शरीफ़ बन जाऊँगा। भले सब बद्-माशी आप हीके घरमें झड़ जाय तो अच्छा है।

सेठ—अरे बुधुआ! (उछल कर बुधुआका सेठके पास चला आना) जाकर यह चिलम सटवा ला, ये हैं तीनों टुकड़े, ठीकसे जोड़वाना।

बु०—(आप ही आप) तुम इसी तरह रोज फोड़वाना। (प्रकट) ये टुकड़े अब सट नहीं सकते। (धीरेसे) अमेरिका भेज दाजिये।

सेठ—जरूर सट जायँगे, ले जा, (टुकड़े देना)

बुधुआ—(आप ही आप) नहीं तो फट जायगा कलेजा!

सेठ—एक पैसेमें ऐसी दो चिलमें आती हैं।

बु०—बेशक, तब क्यों सटवानेमें खर्च करते हैं?

सेठ—साटनेमें क्या खर्चा है? कुम्हार ज़रासी मुलायम मिट्टी लगाकर चिपका देगा। बस, और क्या करना है?

बु०—बिना पैसेके वह नहीं चिपकावेगा। (दर्शकोंकी ओर) भला आप ही लोग कहें कि बिना पैसेके कोई चिलम चिपकाता है? सेठजी अपने ही घरकी तरह दुनिया-जहानको समझते हैं। (सेठजीकी ओर) चिपकाईके

लिये एक पैसा दीजिये, तो ऐसे ऐसे पन्द्रह टुकड़े स-टवा कर पाँच चिलम बनवा लाऊँ।

सेठ—अच्छा, ले यह पैसा, जाकर ऐसी ऐसी पाँच चिलमें जुड़ी हुई ले आ। (पैसा देकर) पैसा सँभाल लिया? देखना कहीं गिरे नहीं, ज़ोरसे मुट्ठीमें दबा ले।

(प्रस्थान)

बु०—(जाता हुआ, ठिठक कर कहता हुआ) बेशक, यह पैसा गिर जायगा तो मुझे भी बहुत अफ़सोस होगा। बड़ी बड़ी हिकमतसे कंजूसके टेटसे यह निकला है। जाता हूँ, पहले इसको हवा और धूप दिखाऊँगा। फाँसीकी सज़ा पाये हुए कैदीकी तरह बहुत दिन तक यह ऐसी जगहमें बन्द था जहाँकी आब-हवा हमेशे बिगड़ी रहती है। अब इसको पहले बाजारकी सैर कराऊँगा। (पैसेको चूमते हुए प्रस्थान)

(रामकुमार और सजनकुमारका प्रवेश)

सजन०—घरमें सेठजी क्यों बिगड़ रहे थे?

राम०—पुरोहितको बेशी खिला देनेसे रंज हैं।

सजन०—क्या पुरोहितको, बेशी खानेसे, अजीर्ण हो गया है?

राम०—पेट भरनेका ठिकाना ही नहीं, अजीर्ण क्या होगा?

सजन०—क्या आधा पेट खिलाया गया था?

राम०—खिलाया तो था मैंने भर पेट, मगर पुरोहित तो

श्रद्धासे सन्तुष्ट होता है, अन्नसे नहीं। मैं कहते कहते थक गया, सेठजी समझे ही नहीं।

(क्रोधित सेठका प्रवेश)

सेठ—हम कैसे समझें ? हमारी बात माननेवाला कोई हो तब तो ? हम कहते रह गये कि, सिर्फ कुछ पैसे देकर उन्हें टरका दो, तो उन्हें इतना भोजन करा दिया गया कि दस गण्डे पैसोकी चपत लग गयी !

सजन०—यह चपत नहीं है, यह बचत है।

सेठ०—बचत है कि खपत है ? यह दशा रहेगी तो जल्दी ही चौका लग जायगा। फिर दर दर ठुकराते फिरना पड़ेगा। बीसों बार कह चुके।

सजन—आप व्यर्थ कहते हैं, जिस पर आ पड़ेगा वह खुद सँभाल लेगा। कहनेसे कोई नहीं चेतता, आ पड़ने पर सब कोई चेत जाता है।

सेठ—जो नहीं चेतेगा वह अपना रास्ता लेगा। किसीके बापकी कमाई है ?

सजन—जिसके बापकी कमाई है वह तो उड़ा ही रहा है ! अपनी कमाई पर खुलकर हाथ नहीं चलता।

सेठ—बस, हम समझ गये कि, तुम्हीं हमारा घर चौपट करा रहे हो।

सजन—आप चाहे जो समझिये, मगर मैं तो दिलसे सबका

भला ही चाहता हूँ। (आप ही आप) जो जैसा रहता है, वह दूसरोंको भी वैसा ही समझता है।

(बु० का प्रवेश)

बु०—बेशक, जो ऐबोंसे भरा रहता है, वही दूसरोंमें ऐब देखता है।

सेठ—ले आया चिलम ?

बु०—बेशक, यह लीजिये (चिलम देता है)

सेठ—(चिराग़की रोशनीमें अच्छी तरह देखकर) चिपकायी तो गयी है ठिकानेसे, मगर चार चिलमें और क्या हो गयीं ?

बु०—एक ही चिलमके चिपकानेमें एक पैसा लग गया ! अब और चार कहाँसे लाऊँ ?

सेठ—(झुँझला कर, सर पीट कर) उफ़ ! नौकरकी यह हालत और लड़केकी हालत इससे भी बुरी। यह जाकर एक पैसा बरबाद कर आया और वह पुरोहितको खिलानेमें घरका आटा गीला कर आया ! दोनों ही चण्डाल हैं। दोनों छँटे बदमाश हैं। (त्यौरी बदल कर घृणाके साथ बुद्धूकी ओर देखना)

सजन—आप बेकार अब गुस्सेसे दिल जला रहे हैं। जो हो गया सो हो गया। बीती ताहि बिसारिये।

सेठ—बिसारिये ? यह बिसारनेकी बात है ? यह तो जन्म भर याद रहेगी। उफ़ ! पैसेका फ़जूलख़र्च भला हम

भूल सकते हैं ? (झँखते हुए, पछताते हुए, प्रस्थान)

सजन—(अलग खड़े हुए रामकुमारसे) अच्छा भाई ! मैं जाता हूँ, जाकर ज़रा पुरोहितजीको चिकनी-चुपड़ी बातोंसे सन्तुष्ट कर आऊँ । ब्राह्मणका पेट काट कर सेठजी जो पैसा जमा करेंगे, वह आगे चलकर तुम्हारा ही सर्वनाश करेगा। मैं फ़ौरन उसी ग्वालियरके गवैये पण्डितजीको साथ लेकर आता हूँ, तो फिर रङ्ग जमेगा ।

(रामकुमारका प्रस्थान)

बु०—"दुनियामें, प्यारे भाइयो ! पैसे भी चीज़ हैं ।
पैसेके लिये सेठजी पूरे मरीज़ हैं ।
ऐसे भी कहीं सूमड़े देखे हैं आपने ?
सर्दीकी रात कट गयी बैठे जो तापने !
'सठ' के सिवा अब सेठको मैं 'सण्ठ' कहूँगा ।
इस सूमकी झिड़की कभी अब मैं न सहूँगा ।

(मटकते हुए प्रस्थान)

राम०—(पुकार कर) बुद्धू ! बुद्धू !! इधर आ ।

बुद्धू—(भीतर आकर) क्या है ?

राम०—तुमने तो बड़ा अच्छा गाना गाया ! वाह ! क्या तुम्हारे पिता अच्छे गवैये थे ?

बु०—बेशक, बाप गवैये न थे तो क्या, माँ तो थी ?

राम०—माँका नाम क्या था ? उसकी उम्र क्या थी ?

बु०—माँकी उम्र मेरे बापको मालूम थी। उसका नाम मेरे नानाको मालूम था।

राम०—क्या तुम्हें इसकी कुछ ख़बर नहीं है?

बु०—ख़बर कैसे हो? मेरे जन्मसे नौ महीने पहले ही माँ मर गयी थी।

राम०—फिर तुम पैदा कैसे हुए?

बु०—सो तो मेरे बापको मालूम होगा। मेरे बापके पैदा होनेका ढङ्ग तो इससे भी निराला है!

राम०—ज़रा मैं भी तो सुनूँ?

बु०—सुनियेगा क्या? (हटकर धीरेसे) जैसे आप पैदा हुए वैसे मेरे बाप भी पैदा हुए थे।

राम०—बतलाओ तो सही कि, माँके मरनेपर तुम कैसे पैदा हुए और तुम्हारे बापकी पैदाइश कैसे हुई?

बु०—बेशक, मैं भूलता हूं। मेरे पैदा होनेके नौ महीने 'बाद' मेरी माँ मरी थी और मेरे बाप दो माँके एक बेटे थे।

राम०—यह तो और ग़ज़ब हुआ! (आश्चर्य्य-भाव)

बु०—ग़ज़ब क्या हुआ? आप तो बूढ़े सेठके लड़के हैं, आप तो यह रहस्य ख़ूब समझ सकते हैं।

राम०—(बिगड़कर) अरे बदमाश! तू मुझसे भी दिल्लगी करता है?

बु०—बेशक, आप क्या बाज़ारू औरत हैं जो आपसे दिल्लगी करूँगा? आपसे मेरी दिल्लगी कैसी?

राम०—(डाँट कर) चल, हट, दूर हो यहाँ से।

बु०—(दूर हटकर, कोनेमें सट कर) दूर कहाँ जाऊँ ? मैं तो यहीं का "घूर" हूं। इसीलिये तो हमेशा भली-बुरी, जली-कटी, खरी-खोटी, बात-लात सहता रहता हूं। अगर कुछ भीतरी लाभ नहीं होता, तो मैं ऐसे सूमके दरवाजे पर कभी नमकीन जल छिड़कने भी नहीं आता। (मुँह पर हाथ देकर हँसते हुए) क्यों ? कैसी कही ?

(जोरसे हँसकर प्रस्थान)

राम०—(झुँझलाकर) बुधुआ मसख़रा तो है, मगर अव्वल दर्जेका नटखट हैं। वह बात बातमें एक बात पैदा करता है। पैदा क्या करता है—सिर्फ़ बालकी खाल निकालता है। न जाने सेठजीको ऐसा अजीब नौकर कहाँसे मिल गया है! सेठजी जब आते हैं तब, हाय पैसा !!! कह कर खोपड़ी खा जाते हैं और बुद्धू जब आता है तब, बेकार बकवाद करके समय नष्ट कर डालता है। मालिक और नौकर दोनोंकी ज़िन्दगी बकवादमें ही बर-बाद होगी।

(पंडितजीके साथ सजनका प्रवेश)

सजन—होगी, तो होने दो। चलो, हम लोग ईश्वरके गुणा-नुवादसे अपनी ज़िन्दगी आबाद करें।

(हाथमें हाथ मिलाये दोनों हँसते जाते हैं। पीछे पीछे पंडितजी भी जल्दी जल्दी जाते हैं। नया पर्दा उठता है। दोनों मित्रोंके साथ, गाते हुए पंडितजीका प्रवेश)

(गाना)

चले गये दिलके दामनगीर—
जब सुधि आवत प्यारे दरस की, उठत कलेजे पीर ॥
नटवर वेश, नयन रतनारे, सुन्दर श्याम शरीर ॥
पीताम्बर-धर, लकुट-मुकुट-धर, वनमाली व्रजवीर ॥
आपु तो जाइ द्वारिका छाये, ऐसो भये बे-पीर ॥
व्रज-बनिता बिलखैं निसि-वासर,ठाढ़ी कलिन्दी-तीर ॥
भूलि गये वृन्दावन मधुबन, निर्मल यमुना-नीर ॥
व्रज-गोपिनको प्रेम बिसरि गयो, चढ़े कदम लै चीर ॥
कौन पिये कजरी धवरीके, सुधा-मधुर अब छीर ॥
बिहरे वंशी-वट-तट को अब ? सूना कुञ्ज-कुटीर ॥
जबसो गये हिय दाह उठत है, जारत गात समीर ॥
ग्वाल-बाल गैया पसु पंछी, काहू धरत न धीर ॥
जेहि कुञ्जनमें रास रचायो, सो भये सूखि करीर ॥
'सूर श्याम' ललिता उठि बोली, आख़िर जाति अहीर ॥

(पर्दा गिरता है)

दूसरा अङ्क ।

(द्वितीय दृश्य)

(सेठजीके बैठकखानेका बाहरी बरामदा)

सेठ—(आश्चर्य्यके साथ) बाप रे बाप ! पेट है कि, क़बरिस्तान है ! (अँगुलियाँ दिखाकर) तीन पर दो लकीर खा गया ! पितर तो स्वर्गमें चले गये ; पर अपने-अपने पेटों को ब्राह्मणोंके हवाले सौंप गये ! पेट क्या है, ख़ासे लेटर-बक्स हैं। यहाँ डाल दीजिये, वहाँ पहुँच जायगा ! न जाने बे-तारका तार है, या टेलीफ़ोनका सरोकार है, या बिजलीका कारोबार है, कुछ समझमें नही आता कि, कैसा व्यापार है !

(सजनका प्रवेश)

सजन—एकही गोलीमें दो शिकार है, और ब्राह्मणोंके साथ-साथ पितरोंका बेड़ा पार है। यहाँ ब्राह्मण हृष्ट-पुष्ट, वहाँ पितर-गण सन्तुष्ट ।

(बुद्धूका प्रवेश)

बुद्धू—यदि यजमान होवें दुष्ट, ब्राह्मण होवें रुष्ट, तो पितरोंके फूटे कुष्ठ। सब धर्म होवें नष्ट, सब कर्म होवें भ्रष्ट। मैं तो कहता हूँ स्पष्ट। चाहे हर्ष हो या कष्ट।

सजन—(डाँट कर) चुप रह बदमाश ! तू तो बातें भी नहीं करने देता।

बु०—हाँ, हाँ, बातें कीजिये। वह ख़ुशख़बरी, जो रामकुमार को सुना चुके हैं, ज़रा सेठ जी को भी सुनाइये।

सेठ—खुशखबरी कैसी ? सजन !

सजन—पुरोहित जी कहते थे कि, यदि हर-एक पूर्णमासी को, पितरों को, पिण्ड दान दिया जाय तो, ज़रूरत होने पर, वे सपनेमें आकर, रुपये-पैसेकी मदद, दे जाते हैं। शायद शिवगञ्ज महल्लेमें, एक बढ़ईके पुरखा, प्रसन्न हो कर, सपनेमें, मोहरोंकी एक थैली सौंप गये थे। उसीसे वह मालामाल हो गया !

बुद्धू—लेकिन उस धनमें कंजूसी करनेसे ही वह कंगाल हो गया !

सेठ—कंगाल हो गया या चण्डाल हो गया, इस जञ्जालसे तो कुछ मतलब नहीं। पहले यह बताओ कि, क्या यह बात सच है ?

सजन—और नहीं तो क्या मैं आपसे झूठ बोलता हूं ? बिल्कुल सच है !

बु०—सिरसे पैर तक सच है। अगल-बगलसे, दहने-बाँयेंसे, लम्बाई-चौड़ाईसे, हर तरफ़से सच ही सच तो है।

सेठ—(डाँट कर) ज्यादा गुस्ताख़ी मतकर। नहीं तो मारते-मारते हम भर्ता निकाल देंगे।

बु०—(मोटेमल सेठकी ओर इशारा करके, दर्शकोंकी ओर) ऐसे ही बैंगनका भर्ता बनूँगा । अहा हा ! (कूदता है)

सजन—(सेठजीसे) आप व्यर्थ बुद्धूकी बातोंमें पड़े हैं । मैं कहता हूं सो कीजिये । रोज़ रातको थोड़ी अच्छी मिठाई, एक फूल-माला और पानके बीड़े, अपने सिरहाने रख कर सोया कीजिये । थोड़े ही दिनोंके बाद पितरगण आपको गिन्नियोंकी थैली सौंप जायँगे ।

बु०—(हट कर कोने में छिपकर) सौंप जायँगे या नहीं ; पर मैं तो सिरहाने की मिठाई रोज ही ज़रूर उड़ाऊँगा । मिठाई चखने के बाद रातको, सेठ जी के घर में, फूल-माला और पान खूब रंग लायँगे । वाहवा ! (उछलता है)

सेठ—(सजन०से) प्रसादी वगैरह तो रोज़ सिरहाने रखकर सोवेंगे, मगर थैली तो ज़रूर न मिलेगी ? इसमें तो कोई मीन-मेख नहीं है न ?

सजन—मीन-मेख कैसा ? जरा विश्वास भी किया कीजिये, बिना विश्वासके उत्तम फल नहीं मिलता ।

सेठ—अच्छा, तो हम जाते हैं । आजही रातको सब सामान करेंगे ।

(प्रस्थान)

बुद्धू—(जाते हुए सेठकी ओर देखकर) यों क्यों नहीं कहते कि, बुद्धूका पेट भरेंगे ।

सजन—तेरे पेट भरनेका सामान तो मैंने कर ही दिया, अब क्यों घबराता है ?

बु०—(हँसकर) घबराता हूं कि, अब जाता हूं सेठजीका पुरखा बनकर लड्डू गपकने ? (खुशीसे उछलते-कूदते जाता है)

सजन—अच्छा, चलूं मैं भी सेठजीको कोई टाइटल या खिताब दिलवानेका उपाय करूँ ।

(सजन जाता है। नया पर्दा उठता है। सेठजीका सजा कमरा नजर आता है)

(सेठका प्रवेश)

सेठ—(पलँग पर बैठ कर) कोई है रे !

(बु० का प्रवेश)

बु०—बेशक, हैं क्यों नहीं ? अभी तो मुसल्लम मैं ही हूं। कहिये, क्या हुक्म है ?

सेठ—जा, प्रसादी वगैरह लाकर मेरे सिरहाने इस टेबल पर रख दे।

बु०—बेशक, अभी लीजिये।

(बु० जाता है, सेठ चादर तानकर सोते हैं)

(रामकुमारका प्रवेश)

राम०—(आश्चर्य्यसे) आज इतना सबेरे सेठ जी क्यों सो गये ? माजरा क्या है ? ज़रूर कुछ दालमें काला है।

(सजनका प्रवेश)

सजन०—नहीं, आज तोड़ा मिलनेवाला है।

राम०—तोड़ा ?

सजन—हाँ, हाँ, तोड़ा। (बु० का प्रवेश)

बु०—(मिठाईका दोना दिखाकर) और मुझे यह पेड़ा मिलनेवाला है !

राम०—क्यों भाई सजन० ! यह 'तोड़ा' और 'पेड़ा' का बखेड़ा कैसा ?

सजन—(सेठकी ओर इशारा करके) पूछो अपने अब्बाजानसे। सोये हुए हैं।

बु०—आपकी अम्माजान भी जानती हैं, उनसे पूछिये।

(रामकुमार बु० को एक चपत खींचकर मारता है)
(बु० मिठाईके साथ गिर पड़ता है)

राम—चुप रह नालायक़ !

सेठ—(बुद्धूकी चिल्लाहट सुनकर, जल्दीमें उठ कर) अरे यह क्या ? (ज़ोरसे गरज कर) आह ! मिठाई भी गिर पड़ी ? शकुन ही बिगड़ गया ! जहन्नुममें जायँ पितर और चूल्हेमें जावें तोड़े। यहाँ तो श्रीगणेश होते ही चपत लगी। सजन ! मिठाई कैसे गिरी ?

(रामकुमार और बु० भाग जाते हैं)

सजन—रामकुमारने बुद्धूकी एक बात पर, उसको कस कर चपत जमा दी; बस, वह डर कर गिर पड़ा।

सेठ—बुधुआ ! बुधुआ ! (बुद्धूके आनेपर) हरामीका पिल्ला रामकुमार कहाँ है ?

बु०—(भयसे सटक कर स्वगत) हरामी तो यहीं है, पिल्ला कहीं और होगा (प्रकट) मैं नहीं जानता।

सेठ—अच्छा, ये मिठाइयाँ उठा कर हमारे टिफ़िन-बक्समें रख दे, हम दूसरी प्रसादी लाने जाते हैं। तू यहीं रह। सजन० ! तुम जा कर उस बढ़ईको बुला लाओ, ताकि शुरूसे सब काम विधिपूर्वक किया जाय। (प्रस्थान)

(बुद्धू वहीं बैठ जाता है। 'बहुत अच्छा' कहते हुए एक ओरसे सजनका और दूसरी ओरसे सेठका प्रस्थान)

राम०—(प्रवेश करके) सेठजी कहाँ गये बुद्धू ?

बु०—पितरोंको बुद्धू बनाने गये हैं।

राम०—पितरोंको बुद्धू बनाने ?

बु०—हाँ, और क्या ? किसी सड़ी-गली गन्दी दूकानसे एक-दो पैसेका गर्दा-खोर बताशा खरीदेंगे और पितरोंको शिरनी चढ़ावेंगे। क्या यह पुरखोंको बुद्धू बनाना नहीं है ? आपने क्या समझा कि, मुझे ही पुरखा बनाने गये हैं ?

राम०—तू बड़ा बातूनी है। बिना बातकी बात बनाता है।

बु०—तो क्या मेरी बातमें कोई करामात नहीं होती ?

राम०—होती है, मगर मौके-मौकेसे कहा कर।

(सजन०के साथ बढ़ईका प्रवेश)

सजन०—(बुद्धूसे) अभी सेठजी नहीं आये ?

बु०—बेशक, आये होते तो यहीं न रहते कि, मैंने उन्हें अपनी धोतीमें छिपा लिया है ?

राम०—(सजन०से) यह आदमी कौन है ?

सजन०—यही सेठजीका भाग्य-विधाता है।

बु०—(हट कर, धीरेसे) बेशक, तब तो बड़ा गाढ़ा नाता है! जो जन्मदाता है वही भाग्य-विधाता कहा जाता है!

राम०—यही है वह बढ़ई जो सपनेकी सम्पत्तिसे धनी हुआ था?

सजन०—हाँ, यही है। इसको ऐसा उपाय सिखलाना चाहिये कि, सेठजीकी सारी सञ्चित पूंजी हम लोगोंके हाथ लगे।

बढ़ई—सिखानेकी क्या ज़रूरत है? मैं ऐसा उपाय बताऊँगा कि, आप लोग दङ्ग रह जायँगे।

सजन०—चुप, चुप, सेठजी आ रहे हैं।

(राम० भाग जाता है, सेठजीका प्रवेश)

बु०—(सेठजीसे) मालिक! यही है वह बढ़ई, जिसको पितरगण प्रसन्न होकर थैली दे गये थे।

सेठ—(सहर्ष) हाँ? बहुत अच्छा, आओ, भाई! बैठो, तुमसे एक सलाह पूछनी है।

(हाथ पकड़कर पलँग पर बैठाना)

बढ़ई—हाँ, हाँ, पूछिये।

सेठ—तुमने पितरोंको कैसे सन्तुष्ट किया था? कैसे मोहरोंकी थैली मिली थी?

बढ़ई—मैं तो हरएक पूर्णमासीको पान, फूल और प्रसादी सिरहाने रखकर सोता था। जो कुछ पूँजी मेरे पास

थी, उसको भी तकियाके नीचे रख लेता था। एक दिन, जब आधी रात हो गयी, सफ़ेद कपड़ेकी झूल पहनकर एक आदमी आया। उसने माला पहन ली। मिठाइयाँ खा गया। पान भी चाब गया। फिर मेरी चारपाईके चारो ओर घूम कर उसने ऊपरकी ओर देखा। मोहरोंसे भरी थैली मेरी चारपाई तक लटक आयी। मैंने उसे पकड़ कर खोल लिया। उस थैलीको मैंने अपनी पूँजीमें रख दिया। दूसरे ही दिन पूंजी दसगुनी हो गयी!

सेठ—(खुशीसे उछलकर) अच्छा, भाई! अब जाओ, हमें जल्दी सोने दो। (बु० और स० की ओर इशारा करके) तुम लोग भी यहाँसे चले जाओ। (ज़ोरसे हँसकर) आजही पूर्णमासी भी है। कैसा संयोग बना है? वाहवा!

(सेठके सिवा सबका प्रस्थान। सेठ अशर्फियों और जवाहरातोंकी थैली सिरहाने रखते हैं। रोशनी कम हो जाती है। सेठ चादर तानकर सोते हैं। सफेद झूल पहने बुढ्ढका प्रवेश। मुँह खोलकर दर्शकोंको दिखाना, पलँगके पास जाना। सेठका कभी-कभी मुँह खोलकर झाँकना। सड़ी मिठाइयाँ, कुछ खाकर, बाकी सूँघकर, बुढ्ढका घृणापूर्वक फेंकना, फिर चारपाईकी प्रदक्षिणा करके, अपनी लाल जीभ और शक्ल दिखाकर, बुढ्ढ का जाना। ऊपरसे, लटकती हुई थैलीका, सेठजी पर जोरसे गिरना। सेठ का चौंककर उठना। थैली पकड़ते ही ऊपर खिच जाना। सेठको ऊपर लटकते-झूलते देख सजन० और राम० का आकर पूँजीकी थैलियां ले भागना। सेठ चिल्लाकर, थैली छोड़, कूद पड़ते हैं।)

—(बड़ा पर्दा गिरता है)—

॥ दूसरा अङ्क समाप्त ॥

तीसरा अङ्क ।

(पहला दृश्य)

(कलकत्तेका एक आलीशान मकान)

(सजन० और राम० का, थैलीके साथ, हँसते हुए प्रवेश)

सजन—सेठजी तो खूब छके ।

राम—हाथ भी लगे काफ़ी टके ।

सजन—चलो, सेठजीको 'रायबहादुरी' का एक नक़ली प्रमाणपत्र छपवा कर, बीमा रजिष्ट्री करके, भेजा जाय। कलकत्तेमें हिन्दी-लेखक भी टके सेर बिकते हैं; किसीसे एक पुस्तक लिखवाकर सेठजीके नाम पर समर्पित कर दी जाय। उसकी भूमिकामें यह लिखा रहे कि, जो सेठजी अपने खाने-पीनेमें भी कौड़ी-कौड़ी किफ़ायत करते हैं, उन्होंने ही हिन्दीकी पुस्तकें प्रकाशित करनेके लिये, अपनी सारी पूँजी दान कर दी है। रुपये हुई हैं, चलो, शीघ्र दोनों चीजें छपवाकर भेज दी जावें।

राम०—(सहर्ष) हाँ, यह तो तुमने बड़ा अच्छा उपाय सोचा किन्तु नक़ली प्रमाणपत्र स्वयं लेकर चलना अच्छा होगा।

सजन०—अच्छा, तो पुस्तक ही पहले भेज दी जाय।

राम०—मेरी रायमें पुस्तक भी अपने साथ ही ले चलना ठीक होगा। ले चलकर वहाँ अपने हाथोंसे सेठजी को सादर समर्पितकर दूँगा। वे तो फूलकर कुप्पा हो जायँगे।

सजन०—कुप्पेकी तरह तो वे खुद मोटे हैं। खैर, मैं चाहता था कि, भारत-भ्रमण करके हमलोग जापान और अमेरिका चलते और वहाँ व्यापारिक शिक्षा प्राप्त करके यहाँ आकर कोई बड़ा सा स्वदेशी कारखाना खोलते।

राम०—अभी हमलोगोंका समाज इतना उदार नहीं है कि, विदेशसे कला-कौशल सीखकर आने पर हमलोगोंको शरण देगा।

सजन०—ऐसे सङ्कीर्ण समाजसे तो निकल जाना ही अच्छा है; पर तुम्हारी जैसी इच्छा।

राम०—मैं तुमसे सहमत हूं; पर इस सूमकी सम्पत्तिको (थैली दिखाकर) जल्दी किसी काममें लगाना चाहिये। नहीं तो, चंचला लक्ष्मी, बहुत दिनोंसे थैलीमें बन्द रहने के कारण, घबरा उठी है।

सजन०—अच्छा तो चलो, इसको हिन्दीकी सेवामें खर्च करें।

(दोनोंका प्रस्थान। नया पर्दा उठता है। सेठजी हलासेस होकर अत्यन्त उदास, चुपचाप, अपनी दूकानपर बैठे हैं। मुनीम भी मन-मारे बैठे हैं, बुद्धूका प्रवेश)

बु०—मालिक! सजन० और राम० आये हैं। बुला लाऊँ?

सेठ—(शिथिलता से) जा, बुला ला, दोनों आवें, पूजी पा ही चुके हैं, अब अपना घर-बार-दूकान सम्हालें; हम अब कुछ न देखेंगे।

(मुँह बिचकाकर बुद्धू जाता है। दोनोंको साथ लेकर आता है। छपी पुस्तक और रायबहादुरीका प्रमाण पत्र सेठके आगे रखकर दोनों सेठको प्रणाम करते हैं। सेठ जोरसे ठंढी सांस लेकर, कमर पकड़े हुए, उठ खड़े होते हैं)

सेठ—यह 'पुस्तक' और यह 'राय बहादुरी' का प्रमाणपत्र हमारी चितापर रखकर फूँक देना। जब हमारी पूंजी चली गयी (आह भरकर) तब ये कागजके टुकड़े लेकर हम क्या करेंगे! हमारा पिण्ड छोड़ दो।

(सेठ जाते हैं, तीनों मिलकर, 'बला टली' कहकर, हँसते हैं, पंडितजीका प्रवेश)

तीनों—(सादर) आइये, आइये, आइये।

राम०—अच्छे अवसर पर आये। आजसे मैं गद्दीका मालिक हुआ हूँ। इस खुशीमें कोई दिलचस्प गाना सुनाइये॥

(पंडितजीका गाना)

राधे राधे सुरसे वंशीमें जो हरि गाने लगे।
गोपियोंके हेत प्रेमानन्द बरसाने लगे॥
देख बाल अलकोंके मुँहपर हरिके ललिताने कहा।
श्याम घन बेतरह अब मुखचन्द पर छाने लगे॥
रात जागे हो कहाँ राधेने पूछा श्यामसे।
जब उनींदे नैन मनमोहनके अलसाने लगे॥
खुल गई शिवकी समाधी सुर असुर मोहित हुए।
बाँसुरी सुनके सहसफन शेष लहराने लगे॥
मिलके सखियोंने पकड़ जब हरिका मुख चुम्बन किया।
माय जसुमति दौड़ियो यह कहके मुस्काने लगे॥

(वाह! वाह! की आवाजके साथ ड्राप सीन)

(समाप्त)

क्रूर बेग

पौराणिक और राजनीतिक नाटक

लेखक

हरद्वारप्रसाद जालान

दुर्व्यसनी और स्वार्थी राजाका अत्याचार, प्रजाका हृदय-विदारक कष्ट, देशभक्तकी निर्भीकता और स्वतन्त्रप्रियता, चापलूसोंकी घोर नीचता, विलासियोंकी विकट लीला, शराबियों और वेश्यागामियोंकी घृणित पतितावस्था, प्रजाकी आहसे राज्यका ध्वंस, देशकी दरिद्रताका नग्न चित्र—यदि आप देखना चाहते हैं तो इस दिलचस्प नाटकको अवश्य पढ़िये। चुलबुली चटकीली और चुभीली भाषा पढ़कर आप फड़क उठेंगे। सुन्दर सजावट भी है। मूल्य १)

पता—हरद्वारप्रसाद जालान,

आरा (ARRAH)